Success

अचार ने बनाया स्वरोजगारी

ग्रामीण आदिवासी क्षेत्र में अचार बनाने और खाने का रिवाज बहुत कम रहा है, धीरे धीरे हो रहे परिवर्तन ने आदिवासी समुदाय को भी अचार से परिचित कराया लोगों ने अचार का प्रयोग करना सीखा पर स्थानीय स्तर पर अचार उपलब्ध ही नहीं है। एफ.व्ही.टी.आर.एस. के सहयोग से सी.डी. सी. ने एन.टी.एफ.पी. और फूड प्रोसेसिंग पर तीन माह का प्रशिक्षण प्रारंभ किया। इस प्रशिक्षण में बडी संख्या में शाला त्यागी युवतियों में भाग लिया और बडी उत्सुकता से प्रशिक्षण में भाग लिया, प्रशिक्षण के दौरान युवतियों को बडी खुशी थी कि इन्होने पॉच से छैः प्रकार के अचार बनाना सीख लिया, युवतियों ने सोचा भी नहीं कि ये किस तरह उन्हें स्वरोजगारी बना देगा। प्रशिक्षण के दौरान स्वरोजगार पर व्यापक चर्चा हुई और पॉच दिवसीय ई.डी.पी. के दौरान स्वरोजगार पर विशेष ध्यान दिया गया। प्रशिक्षण के पश्चात प्रयोग के तौर पर अचार को स्थानीय स्तर पर बेचने का प्रयास किया गया और इसका बेहतर परिणाम निकला। फिर क्या था सभी युवतियों ने अपने स्तर पर अचार बनाया और बेचना प्रारंभ किया जिससे इन्हें पैसे भी मिलने लगे। प्रशिक्षण के तुरंत बाद युवतियों ने काफी अचार बनाया और स्थानीय जगहों पर ही बेचा और सभी ने रू.500 से 2000 तक कमाये। इस तरह सभी प्रशिक्षित युवतिया स्वरोजगारी बन गयीं। सभी का विचार है आने वाले समय में सभी ने योजना बनायी है कि किस तरह अधिक पैसा कमाया जा सके। संस्था ने सभी को सहयोग करने और बेहतर मार्केटिंग के लिए पैकेजिंग के तरीके हेतु कॉच की बॉटल और स्टीकर उपलब्ध करायें हैं साथ ही यह भी तय हुआ है कि आगामी समय में सभी बडे पैमाने पर अचार का व्यवसाय करेंगे।

Sustainable employment through MCR

Skill training provided to school drop out youths on MCR [Micro Concrete Roofing] tiles through the project of FVTRS and CDC. CDC helps youths for sustainable livelihood through setting up own enterprises.

After three month skill training and EDP training, most of youths planning to setting the enterprise in group, they are in process to mobilize resources to purchase machine and other equipment. But the existing MCR units give good employment to five trained youths. After training the youths, **Ishwarchand Dhurvey, Komal Dhurvey, Vijay Yadav, Roopsing Dhurvey and Komalchand Panchtilak** has produced 5000 pieces of MCR and sold it locally, The initial cost comes around Rs. 6 for per piece and they have sold it @ Rs. 12 locally and got Rs. 60000. They were able to earn around Rs. 6000 per head within 40 days. Youths are very much exited and interested for own enterprise and making all efforts.

एक कदम आगें बढ़ाये हम

ग्राम :– खजरा बालाघाट मुख्यालय से 105 कि.मी., बैहर तहसील एवं विकासखंड से 40 किमी. दुर मुख्य सड़क से 3 किमी. कान्हा नेशनल पार्क बफर जोन से लगा हुआ गांव जहां पर मुख्य रूप से आदिवासी परिवार के लोग निवासरत है। वे लोग अपनी आजीविका के लिये कृषि एवं वन से प्राप्त फलों पर आश्रित है। जहां पर एफ. व्ही. टी. आर. एस. एवं सी. डी. सी. के सहयोग से यहां पर ऐसे बालक बालिकाये जो कि शाला त्यागी हैं क्योंकि यहां पर शिक्षा का स्तर भी काफी कम है। एवं इन लोगों के पास किसी प्रकार की कला का भी अभाव है। अतः इन लोगों को क्षमता विकास प्रशिक्षण जिसमें एन. टी. एफ. पी. एवं फूड प्रोसेसिंग का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात एक समूह के रूप में इन्होने अपना व्यवसाय प्रांरभ करने की योजना बनाई एवं 5 लोगो का अपना समुह बना कर त्रिफला निर्माण कर बेचने की योजना बनाई। इस हेतु इन्होने 5000.00 रूपये का कच्चा माल खरीदा एवं उसे प्रोसेस एवं पैकेजिंग कर लोकल एवं विभिन्न व्यवसायिक मेलों के माध्यम से अपना व्यवसाय प्रांरभ कर दिया है। जिससे इन्हें आर्थिक लाभ प्राप्त हो रहा है एवं स्वयं का इंटरप्राइस करने की ओर अग्रसर हो रही है। इनके समुह में कु. यामिनी, कु. कविता, कु.लता, चंद्रकला, उषा हैं।

अपनी आजीविका अपना काम

इन लोगो को क्षमता विकास प्रशिक्षण जिसमें एन. टी. एफ. पी. एवं फुड प्रोंसेसिंग का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात एक समुह के रूप में इन्होने अपना व्यवसाय प्रांरभ करने की योजना बनाई एवं 4 लोगों का अपना समूह बना कर आचार निर्माण जिसमें मिक्स अचार ,देशी मिर्च का आचार, नींब का अचार बना कर बेचने की योजना बनाई। इस हेतू इन्होने 4000.00 रूपये का कच्चा माल खरीदा एवं उसे प्रोसेस एवं पैकेजिंग कर लोकल रिर्सोट, होटल, घरो एवं विभिन्न व्यवसायिक मेलों के माध्यम से अपना व्यवसाय प्रांरभ कर दिया है। जिससे इन्हें आर्थिक लाभ प्राप्त हो रहा है एवं स्वयं का इंटरप्राइस करने की ओर अग्रसर हो रही है। इनके समुह में कु. मंजू, कु.सुशिला, कु. भागवती, कु.अनुसुइया, कु. सुखबती सम्मिलित है।

स्वयं का रोजगार

ग्राम :– खजरा बालाघाट मुख्यालय से 105 कि.मी., बैहर तहसील एवं विकासखंड से 40 किमी. दुर मुख्य सड़क से 3 किमी. कान्हा नेशनल पार्क बफर जोन से लगा हुआ गांव जहां पर मुख्य रूप से आदिवासी परिवार के लोग निवासरत है। वे लोग अपनी आजीविका के लिये कृशि एवं वन से प्राप्त फलो पर आश्रित है। जहां पर एफ. व्ही. टी. आर. एस. एवं सी. डी. सी. के सहयोग से यहां पर ऐसे बालक बालिकाये जों कि भााला त्यागी क्योंकि यहां पर ि ाक्षा का स्तर भी काफी कम है। एवं इन लोगो के पास किसी प्रकार की कला का भी अभाव है। अतः इन लोगो को क्षमता विकास प्रि ाक्षण जिसमें एन. टी. एफ. पी. एवं फुड प्रोंसेसिंग करने का प्रि ाक्षण दिया गया। प्रि ाक्षण प्राप्त करने के प चात एक समुह के रूप में इन्होने अपना व्यवसाय प्रांरभ करने की योजना बनाई एवं 4 लोगो का अपना समुह बना कर आचार निर्माण जिसमें मिक्स आचार ,देशी मिर्च का आचार, नींबु बना कर बेचने की योजना बनाई। इस हेतू इन्होने 4500.00 रूपये का कच्चा माल खरीदा एवं उसे प्रोसेस एवं पैकेजिंग कर लोकल बाजार ,गांव के घरो एवं दुकानों में अपने द्वारा बनायें चने, मुर्रे का व्यवसाय प्रांरभ कर अपना कार्य कर रहे है। जिससे इन्हे आर्थिक लाभ प्राप्त हो रहा है। एवं स्वयं का इंटरप्राइस करने की ओर अग्रसर हो रही है। इनके समुह में इमला कुशरे ,कलावती ,कु.गनेशिया , सम्मिलित है।